Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
ISSN 2320–7175 | Volume 09, Issue 01, June 2021
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org
© The Author(s) 2021
UGC CARE listed Journal

भारतीय संगीत की नवीन गायन शैली जसरंगी जुगलबन्दी

Alisha Rani

Research Scholor, M.D.U. Rohtak, Hariyana

शोध सार

शास्त्रीय संगीत भारतीय संगीत का मूल आधार है। शास्त्रीय संगीत को नियमों में बांधकर गाया जाता है। शास्त्रीय संगीत में गायन शैली के कई प्रकार हैं जैसे ध्रुपद, ख्याल, विलम्बित ख्याल, मध्य लय ख्याल, द्रुतलय ख्याल। शास्त्रीय संगीत मे एक नवीन गायन शैली प्रचार में आ रही है जिसका नाम है 'जसरंगी जुगलबन्दी'। इस गायन शैली का आविष्कार संगीत मार्तण्ड पद्मविभूषण पंडित जसराज ने किया। शास्त्रीय संगीत में एक समय मे एक ही राग गाया जाता है, परन्तु इस गायन शैलीकी विषेशता है कि एक समय पर दो राग गाये जाते हैं, श्रोताओं को लगता है कि एक ही राग गाया जा रहा है। इस शोधपत्र में दत्त संकलन को साक्षात्कार के माध्यम से एकत्रित किया गया है।

बीज शब्दः जसरंगी–जुगलबंदी, पंडित जसराज।

भूमिका

शास्त्रीय संगीत मे एक नवीन गायन शैली जुड़ गई है जिसका नाम है जसरंगी जुगलबन्दी। इस गायन शैली का आविष्कार हमारे संगीत मार्तण्ड पदविभूषण पंडित जसराज जी ने किया। शास्त्रीय संगीत मे यह एक नया और बहुत ही खूबसूरत आविष्कार हुआ। शास्त्रीय संगीत की अगर बात करें तो एक समय में एक ही राग गाया जा सकता है, परन्तु इस गायन शैली की विषेशता है कि एक समय पर दो राग गाये जाते हैं परन्तु सुनने वालों को लगता है कि एक ही राग गाया जा रहा है।

जसरंगी जुगलबन्दी

जसरंगी जुगलबन्दी एक नवीनतम गायन शैली है। इस गायन शैली की एक विशेषता यह है कि इसमें एक समय में स्त्री व पुरूष दो रागों को एक मंच पर एक साथ प्रस्तुत करते हैं, परन्तु सुनने वालों को लगता है कि एक ही राग गाया जा रहा है यही इस गायन शैली की अदभुत विशेषता है। वैसे हम राग प्रस्तुति की बात करें तो एक समय मे एक ही राग गया या बजाया जा सकता है। परन्तु इस गायन शैली मे दो रागो को गाया जाता है और श्रोताओं को लगता है कि एक ही राग का प्रस्तुतीकरण हो रहा है। परन्तु जिन्होने ने संगीत की शिक्षा ली है वो इस विधा को समझ जाते हैं कि दो राग गाये जा रहे हैं, परन्तु आनन्द एक राग समझकर ही लेना चाहिए। अगर दोनों रागों को अलग अलग सुनकर आनन्द लेना चाहें तो ले सकते हैं, परन्तु दो रागों की समझ आने के बाद जरूरी है कि दोनों रागों को एक मिश्रण के रूप सुनकर आनन्द लिया जाए, क्योंकि पंडित जसराज जी ने जब इस गायन शैली का आविष्कार किया तो यही सोच कर किया कि श्रोता इसे एक ही राग समझकर व सुनकर आनन्द ले सके। इसलिए दोनों रागों की समझ आ जाने के बाद भी एक राग का मिश्रण समझकर आनन्द लेना चाहिए।

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
ISSN 2320–7175 | Volume 09, Issue 01, June 2021
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org
© The Author(s) 2021
UGC CARE listed Journal

जुगलबन्दी व जसरंगी जुगलबन्दी

हमारे संगीत का इतिहास देखें तो जुगलबन्दी तो प्राचीन काल से चलती आ रही है। शास्त्रीय संगीत में कभी गायक व वादक की जुगलबन्दी, एक से अधिक गायको की जुगलबंन्दी, एक से अधिक वादकों की जुगलबन्दी, बहुत सी जुगलबन्दी, स्त्री व पुरूष कलाकार की भी होती थी और आज भी होती है, परन्तु जसरंगी जुगलबन्दी एक बहुत ही अदभुत व विचित्र जुगलबन्दी है जिसमे स्त्री व पुरूष मूर्च्छना के आधार पर दो रागों को प्रस्तुत करते हैं और एक ही समय पर और दोनो गायकों की गातें समय पिच अलग–अलग होती है और यह अपने आप में एक अद्भुत व कठिन आविष्कार है।

जसरंगी जुगलबन्दी का मूल आधार मूर्च्छना

इस गायन शैली का मूल आधार मूर्च्छना है। षड़ज–मध्यम व षडज–पंचम भाव के आधार पर इस गायन शैली को गाया जाता है इस गायन शैली में दो राग इस तरह प्रस्तुत किये जाते हैं कि स्त्री के ''म'' को पुरूष अपना ''सा'' मानते हैं और पुरूष के ''सा'' के हिसाब से ''मन्द्र प'' को स्त्री अपना सा मानकर गाती हैं। इस तरह स्त्री के ''म'' को ''सा'' मानकर पुरूष अपना राग प्रस्तुत करते हैं और उसी समय मे स्त्री अपने ''सा'' से अपना राग प्रस्तुत करती है। अब हम मूर्च्छना पर आधारित जसरंगी जुगलबन्दी की बात करें तो इसमे जब एक स्त्री अपने ''सा'' से शुद्ध मध्यम वाला राग ललित प्रस्तुत करती है तो उनके ''म'' को ''सा'' मानने पर राग पूरिया धनाश्री के स्वर बनते है तो उस समय मे पुरूष पूरिया धनाश्री राग प्रस्तुत करते है और स्त्री ललित राग। इस तरह एक समय मे राग ललित व राग पूरिया धनाश्री एक ही मंच पर प्रस्तुत किये जाते हैं और सुनने वालो को एक ही राग का आनन्द आता है। स्त्री के ''म'' को ''सा'' मानकर जब स्वर आगे बजाते है तो वो स्वर स्त्री के राग के अनुसार उसके राग के तार व अति तार सपतक के स्वर होते हैं, परन्तु पुरूष के ''सा'' के हिसाब से जिसमे उसने स्त्री के ''म'' को ''सा'' माना है तो वही स्वर राग पूरिया धनाश्री के बन जाते है, यही इस गायन शैली की विचित्रता व खूबसूरती है कि एक समय मे दो राग गाये जो रहे है, परन्तु सुनने वालो को एक ही राग सुनाई दे रहा है।

जसरंगी जुगलबन्दी गायन शैली का प्रस्तुतिकरण

सबसे पहले इस गायन शैली का प्रस्तुतिकरण पुणे मे किया गया और वही से इस गायन शैली का नाम जसरंगी जुगलबन्दी पड़ गया। भारतवर्ष के 36 वें वर्षगांठ समारोह मे मुम्बई से आई गायिका डॉ. अश्विनी भिड़े देशपांडे व पुणे से आए पंडित संजीव अभयंकर जी ने शास्त्रीय संगीत मे चुनौतीपूर्ण प्रस्तुति दी जिसका नाम जसरंगी जुगलबन्दी गायन शैली है। संजीव अभयंकर जी मेवाती घराने से हैं व अश्विनी भिडे जी जयपुर घराने से। इनकी जुगलबन्दी इतनी बेहतरीन थी कि सुनने वालो को पता ही नही चला कि गायक अलग अलग दो राग गा रहे हैं और दोनों को अलग अलग वादय संगतकार ही संगत कर रहे थे। इस गायन शैली मे दोनों गायक की पिच भी अलग अलग होती है। इसीलिए दोनों सिंगर को अलग अलग वादय संगतकार इस गायन शैली मे रखने पड़ते हैं। एक समय में दो राग प्रस्तुत करना बहुत ही मुश्किल कार्य है, परन्तु दोनों गायक एक दूसरे को बढ़ावा देते हुए व अपने राग के भीतर रहते हुए प्रस्तुति देते हैं। इस प्रस्तुतिकरण से पहले श्रोताओ को कहा जाता है कि वे रागो के अंतर पर ना जाए बल्कि जुगलबन्दी के एकत्रित परिणाम को सुनकर आनन्द लें। इस तरह श्रोताओं द्वारा इस जुगलबन्दी को सराहा गया।

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
ISSN 2320–7175 | Volume 09, Issue 01, June 2021
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org
© The Author(s) 2021
UGC CARE listed Journal

रागों का चयन

इस गायन शैली में रागों का चयन भी मूर्च्छना पद्धति के आधार पर किया जाता है। जिस प्रकार गायिका के ''सा'' से जो राग गाया जाएगा, उनके ''म'' को ''सा'' मानने पर जब आगे स्वर बजाए जाते हैं तो वो स्वर गायिका के राग के अनुसार उनके तार व अतितार सप्तक के स्वर होते हैं लेकिन उनके ''म'' को ''सा'' मानने पर वही स्वर किसी और राग के बनते दिखाई देते हैं, जब ऐसा होता है तब उन दो रागों को जसरंगी जुगलबन्दी के लिए चयनित किया जाता है। अगर गायिका के किसी राग मे ''म'' को ''सा'' मानने पर वो स्वर किसी अन्य राग के नही बनते तो उन रागो को जसरंगी जुगलबन्दी के लिए चयन नही किया जा सकता। अतः हम कह सकते हैं कि गायिका के ''म'' को ''सा'' मानने पर जब किसी अन्य राग के स्वर बनते है तो उन रागों को जसरंगी जुगलबन्दी के लिए चयन किया जाता है।

बंदिश का चयन

इस गायन शैली में बंदिश के बोलो का चयन दो राग अलग अलग होने के कारण अलग अलग बोलों का चयन नही किया जाता, क्योंकि अगर बोल अलग–अलग चयन किये जाएंगे तो इस गायिकी का जो मूल मतंव्य है कि लोगों को दो राग गानें पर भी एक राग सुनाई दें, वो खत्म हेाता दिखाई देता है। जब दोनों गायक व गायिका के इस जुगलबनदी मे बोल एक होंगे, तभी तो राग सुनने मे एक लगेगा और वैसे भी अलग–अलग बोल गाये जाएंगे तो श्रोता इस गायिकी का आनन्द नहीं ले पांएगे, इसलिए इस गायिकी में राग तो दो हैं परन्तु बोल दोनों रागों के एक ही निर्धारित किए जाते हैं।

पिच का चयन

इस गायन शैली मे गायक व गायिका अलग अलग पिच पर गाते हैं। पिच का चयन इस तरह किया जाता है कि गायक व गायिका की आवाज की वास्तविकता खत्म न हो और खराब न हो व सुनने वाले श्रोताओं को पूर्ण आनन्द प्राप्त हो सके। ये अपने आप मे बहुत ही मुश्किल कार्य है। एक समय मे गायक व गायिका अलग अलग पिच पर गा रहे है पर स्वर से बेसुरे नहीं होते। पिच का चयन भी इस आधार पर किया गया है कि दोनों की आवाज की मधुरता कायम रहे।

कलाकारों के साथ वाद्य संगतकार

जसरंगी जुगलबन्दी मे दोनों कलाकारों गायक व गायिका के साथ वाद्य संगतकार भी अलग अलग होते है। गायिका के साथ तानपुरा व तबले पर अलग संगतकार होते हैं व गायक के साथ अलग। इस कारण यह है कि दोनो गायक अलग–अलग पिच पर गाते हैं और तबला, हारमोनियम, तानपुरा को उसी पिच मे मिलाया जाता है जिस पिच पर गायक व गायिका गाते हैं। इसलिए दोनों कलाकारों की पिच अलग अलग होने के कारण वाद्य संगतकार भी अलग अलग निर्धारित किये जाते हैं,क्योंकि दोनों गायकों की पिच अलग अलग हैं और दोनों को अपने–अपने राग में बने रहने के लिए स्वर की आवश्यकता रहती है। अतः दोनों कलाकारों को अपना अपना स्वर मिलता रहे इसके लिए आवश्यक है कि दोनों कलाकारों के साथ अलग अलग वादय संगतकार निर्धारित किये जाए। वैसे तो यह बहुत ही मुश्किल है कि एक ही मंच पर एक समय मे दो राग गाये जा रहे हैं और दोनों कलाकारों को एक दूसरे के राग का स्वरूप सुनाई देता रहता है, लेकिन उसके बावजूद भी वो अपने राग

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
ISSN 2320–7175 | Volume 09, Issue 01, June 2021
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org
© The Author(s) 2021
UGC CARE listed Journal

के स्वरो को संभाल कर व अपने राग में बंधकर प्रस्तुति देते हैं व बेसुरे भी नहीं होते। यह करना बहुत ही मुश्किल है, परन्तु पंडित जसराज जी के इस आविष्कार की सराहना करते हुए उनके कदमो पर चलते हुए पंडित संजीव अभयकर जी, डा. अश्विनी भिड़े जी, अंकिता जोशी, कृष्णा बोगाने, पंडित रामरतन मोहन शर्मा जी, गारगी सिद्वांत जी इस गायन शैली को श्रोताओं के सामने बखूबी प्रस्तुत कर रहे हैं।

ताल का चयन

जसरंगी जुगलबन्दी में दोनों कलाकारों के साथ तबला बादक तो अलग अलग होते हैं लेकिन जैसे बंदिश के बोल एक जैसे रखे जाते हैं, वैसे ही ताल भी दोनों कलाकारों के साथ एक ही निर्धारित की जाती है। फिर चाहे वह एक ताल हो या तीन ताल हो। दोनो रागों में एक ही ताल का चयन किया जाता है। इसका कारण भी यह है कि श्रोता इस जुगलबनदी को एक मिश्रण के रूप मे सुन सकें। इस तरह हम देखें तो इस जुगलबन्दी मे मूर्छना के आधार पर राग तो दो गाये जो रहे है, परन्तु उन रागों की बन्दिश के बोलो का चयन व ताल का चयन एक ही रखा जाता है व मूर्च्छना पद्धति के कारण दोनो राग श्रोताओ को एक ही सुनाई देते हैं।

जसरंगी जुगलबन्दी मे कलाकारों द्वारा गाये गए कुछ रागो का विवरण इस प्रकार है:

1–राग शुद्ध धैवत की ललित व राग पूरिया धनाश्री = राग ललित डा. अश्विनी भिड़े देशपांडे जी द्वारा गाया गया व उन्ही के ''म'' को ''सा'' मानकर पंडित संजीव अभयंकर जी ने राग पूरिया धनाश्री गाया। राग शुद्ध धैवत की ललित के ''म'' को ''सा'' मानने पर राग पूरिया धनाश्री के स्वर बनते हैं। इस राग मे बंदिश के बोल है = ''माये री श्याम श्याम रटत'' व ये बन्दिश एक ताल मे गायी गई।

2–राग आभोगी व राग कलावती = राग अभोगी डा. अश्विनी भिड़े जी द्वारा गाया गया व उनके ''म'' को ''सा'' मानने पर राग कलावती के स्वर बनते है तो राग कलावती को पंडित संजीव अभंयकर जी ने गाया। इस राग के बन्दिश के बोल है = ''तोरे घर रस बरसत'' व इस राग को एक ताल मे बांधकर गाया गया।

3–राग दुर्गा व राग भोपाली = इसमे राग दुर्गा डा0 अश्विनी भिड़े द्वारा गया गया और उनके ''म'' को ''सा'' मानकर राग भोपाली के स्वर बनते है तो राग भोपाली पंडित संजीव अभंयकर जी द्वारा गया गया इस राग मे बंदिश के बोल हैं =''मोरा रे मनवा तुम्ही सन''

4–राग नैट भैरव व राग मधुवन्ती = इसमे राग नट भैरव डा0 अश्विनी भिड़े द्वारा गया गया व उनके ''म'' को ''सा'' मानकर राग मधुवन्ती बनता है तो राग मधुवन्ती पंडित संजीव अभयंकर जी ने गाया। इस राग के बन्दिश के बोल है =''काहे मान करो सखी री अब'' और ये तीन ताल मे बंधकर गाये गए। इसी राग को अंकिता जोशी व कृष्णा बोगाने जी ने भी गाया और उनके बंदिश के बोल हैं = ''उन सो मोरी लगन'' ये बंदिश तीन ताल मे बंधकर गायी गई।

5–राग पूरिया धनाश्री व शुद्ध धैवत की ललित = इसमे राग ललित अंकिता जोशी द्वारा गाया गया व उनके ''म'' को ''सा'' मानकर राग पूरिया धनाश्री कृष्णा बोगाने जी द्वारा गाया गया।

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
ISSN 2320–7175 | Volume 09, Issue 01, June 2021
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org
© The Author(s) 2021
UGC CARE listed Journal

6–राग चन्द्रकौंस व राग मधुकौंस =इस राग मे राग चन्द्रकौस अंकिता जोशी द्वारा गया व उनके राग के''म'' को ''सा'' मानकर राग मधुकौंस कृष्णा बोगाने जी द्वारा गाया गया। इनके राग के बंदिश के बोल है ="उड जा रे पवन''। इसी राग को पंडित रामरत्न मोहन शर्मा जी व पंडिता गारगी सिद्वांत जी ने भी गाया।

7–राग शुद्ध बसंत व राग पूरिया धनाश्री :– राग शुद्ध बसंत ''तरीपति मुखर्जी'' ने गाया व राग पूरिया धनाश्री पंडित संजीव अभयंकर जी ने गाया।

8–राग वृंदावनी सारंग व राग जोग :– इसमे राग जोग पंडिता गारगी सिद्वांत जी ने गाया और उनके ''म'' को ''सा'' मानकर पंडित रामरत्न मोहन शर्मा जी ने राग जोग गाया। इन राग मे बंदिश के बोल है = ''कमल मुख देखत कौन''

निष्कर्ष

अंत में जसरंगी जुगलबन्दी को समझने के बाद यह कहा जा सकता है कि शास्त्रीय संगीत मे इस गायन शैली का आविष्कार पंडित जसराज जी ने किया और ये गायन शैली बहुत ही मुश्किल अद्भुत व मधुर गायन शैली है। पहली बार इस गायन शैली को पुणे में पंडित संजीव अंभयकर जी द्वारा गाया गया और श्रोताओं को सुनकर इतनी अच्छा लगा कि श्रोताओं ने इस जुगलबन्दी का नाम ''जसरंगी जुगलबन्दी'' रख दिया अर्थात जस के रंग मे रंगी हुई जुगलबन्दी।एक समय मे दो रागो को एक मंच पर एक साथ प्रस्तुत करना बहुत ही मुश्किल कार्य हैं। अतः कहा जा सकता है कि शास्त्रीय संगीत मे यह एक बहुत ही खूबसूरत और मुश्किल आविष्कार हुआ, जिसका नाम है जसरंगी जुगलबंदी।

संदर्भ सूची

साक्षात्कार

दुर्गा जसराज, संगीत विशेषज्ञ, मेवाती घराना, इन्टरवयू आन फोन, तिथि 22–10–2020, स्थान टोहाना।
पंडित संजीव अभयंकर, शास्त्रीय गायक, मेवाती घराना, इन्टरवयू आन फोन, तिथि 20–10–2020, स्थान टोहाना।
अंकिता जोशी, शास्त्रीय गायिका, मेवाती घराना, इन्टरवयू ओन फोन, तिथि 22–10–2020, स्थान टोहाना।
कृष्णा बोगाने, शास्त्रीय गायक, रामपुर सहस्वान घराना, इन्टरवयू ओन फोन, तिथि 23–10–2020, स्थान टोहाना।
पंडित रामरत्न मोहन शर्मा, शास्त्रीय गायक, मेवाती घराना, इन्टरवयू ओन फोन, तिथि 22–10–2020, स्थान टोहाना।
पंडिता गारगी सिंद्वांत, शास्त्रीय गायिका, मेवाती घराना, इन्टरवयू ओन फोन, तिथि 22–10–2020, स्थान टोहाना।